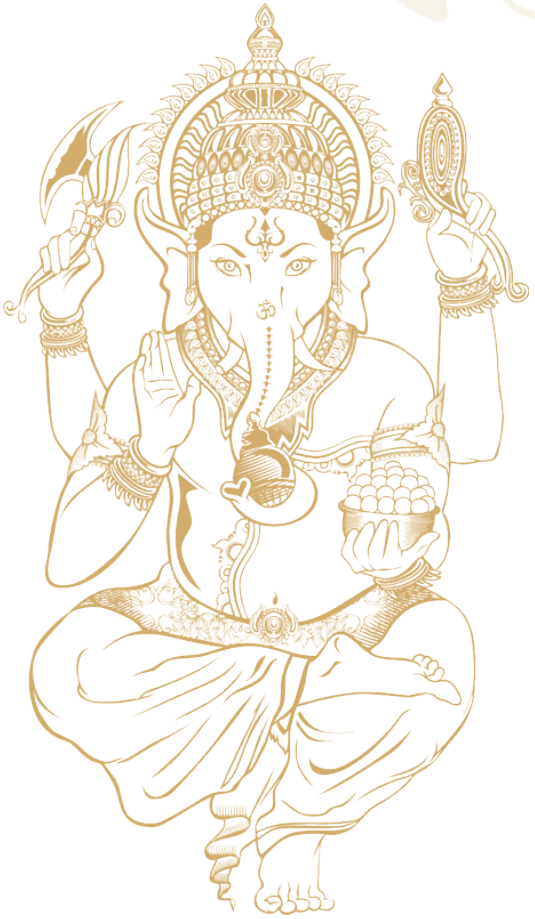

Mrs.Anupama ji

21 Mar 1989

04:00 PM

Mughal Sarai

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120390001**

तिथि 21/03/1989 **समय** 16:00:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Mughal Sarai **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:42:31
अक्षांश 25:18:00 उत्तर **रेखांश** 83:07:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:02:28 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:58:09 घं
वेलान्तर	00:07:14 घं
सूर्योदय	06:01:04 घं
सूर्यास्त	18:08:53 घं
चैत्रादि संवत	2045
शक संवत	1910
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	15
नक्षत्र	पू०फाल्गुनी
योग	गण्ड
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	मूषक
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	दू-टुनटुन
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	शुक्र
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

शुक्र 0वर्ष 3मा 3दि

राहु

24/06/2012
24/06/2030

राहु	07/03/2015
गुरु	30/07/2017
शनि	05/06/2020
बुध	24/12/2022
केतु	11/01/2024
शुक्र	11/01/2027
सूर्य	06/12/2027
चन्द्र	06/06/2029
मंगल	24/06/2030

योगिनी

उल्का 0वर्ष 0मा 28दि

सिद्धा

19/04/2025
18/04/2032

सिद्धा	29/08/2026
संकटा	19/03/2028
मंगला	29/05/2028
पिंगला	18/10/2028
धान्या	19/05/2029
भ्रामरी	27/02/2030
भद्रिका	17/02/2031
उल्का	18/04/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:54:42	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	---	0:00			
सूर्य			07:04:43	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	मित्र राशि	1.26	ज्ञाति	पितृ	वध
चंद्र			26:29:38	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	केतु	मित्र राशि	1.24	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			12:26:02	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	राहु	सम राशि	1.55	मातृ	भ्रातृ	विपत
बुध		अ	23:59:00	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	0.89	अमात्य	ज्ञाति	साधक
गुरु			07:54:01	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	1.42	पुत्र	धन	सम्पत
शुक्र		अ	03:23:14	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	उच्च राशि	1.39	कलत्र	कलत्र	वध
शनि			19:21:42	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	सम राशि	1.27	भ्रातृ	आयु	जन्म
राहु	व		11:07:54	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		11:07:54	सिंह	मघा	4	केतु	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

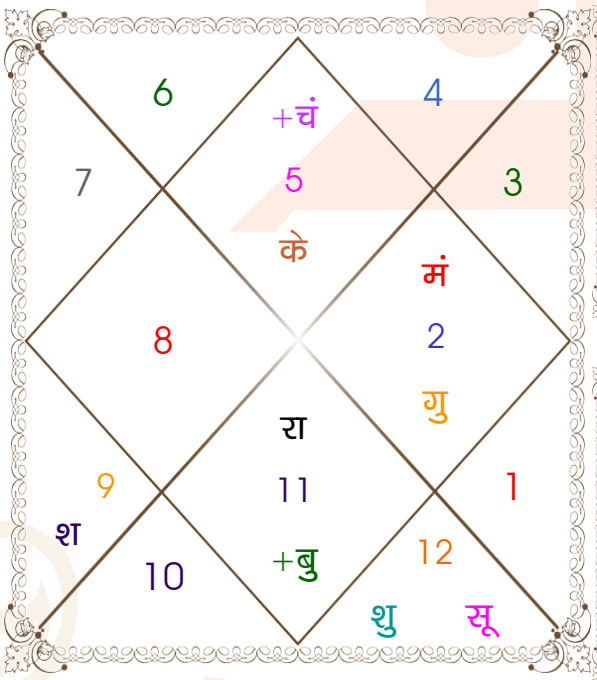

चन्द्र कुंडली

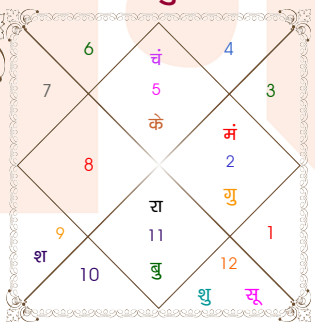

नवमांश कुंडली

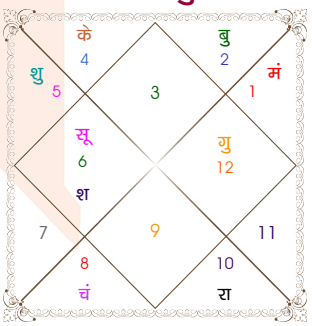

सर्वाष्टकवर्ग

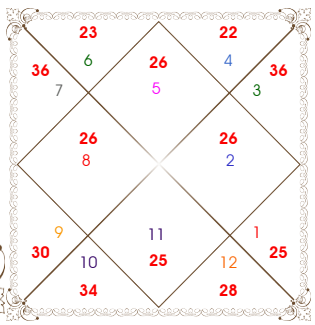

दशमांश कुंडली

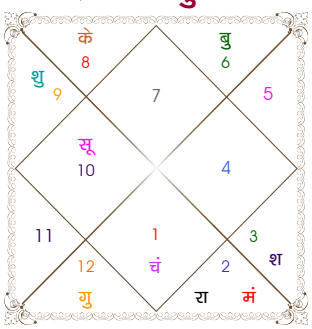

नक्षत्रफल

आप पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य रहेगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मूषक, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग श्वान, गण मनुष्य तथा नाड़ी मध्य रहेगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "टु" या "टू" अक्षर से होगा।

विद्याध्ययन में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी। आपकी प्रकृति गम्भीर होगी फलतः सभी दैनिक कार्यकलाप गम्भीरता से ही सम्पन्न होंगे। पुरूषों के प्रति आपके मन में गहन आकर्षण रहेगा तथा उनसे पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगी। समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुख संसाधनों की आप हमेशा उपभोग करने वाली होंगी। साथ ही आप उच्च कोटि की विदुषी भी होंगी। अतः श्रेष्ठ विद्वान भी आपको आदरणीय समझेंगे।

विद्या गोधन संयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः।
पूर्वाफाल्गुनिकां जातः सुखी पंडित पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्या, गौ एवं धन से सम्पन्न, गम्भीर प्रकृति वाला, स्त्रियों का प्रिय, सुखी तथा विद्वानों द्वारा पूजनीय होता है।

आपकी वाणी अत्यन्त मधुर तथा प्रिय होगी जिसे सुनकर अन्य लोग भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आप व्यवहार में भी कुशल रहेंगी तथा अपने कुशल एवं विनयशील व्यवहार से सभी लोगों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप दानी होंगी तथा समय समय पर इस वृति का पालन करती रहेंगी। आपके शरीर की शोभा कान्तिमय होगी जिसे देखकर सभी लोग आपकी तरफ आकर्षित रहेंगे। आपका अधिकाँश समय यात्राओं में व्यतीत होगा तथा राजकीय सेवा में भी आप तत्पर रहेंगी।

प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक प्रिय वक्ता, व्यवहारज्ञ, दानप्रिय, कान्तियुक्त शरीर वाला, यात्रा प्रिय तथा राज्य में राजसेवक होता है।

आप स्वभाव से ही अधिक चंचल रहेंगी तथा कठोर कर्मो को करने में भी आपका ध्यान रहेगा। आप में त्याग की भावना भी पाई जाएगी जिसका उपयोग आप अपने जीवन में करती रहेंगी। आप एक दृढ संकल्पी महिला होंगी तथा जिसके बारे में एक बार सोच लेंगी उसे पूरा करके ही छोड़ेंगी।

फल्गुन्यां चपलः कुकर्मस्त्यागी दृढ़ कामुको।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वा फाल्गुनी में उत्पन्न जातक चंचल, कुकर्म करने वाला, त्यागी, दृढ़ तथा कामवासना प्रधान व्यक्ति होता है।

आपका स्वभाव निर्भय तथा साहस से युक्त रहेगा। आप जो भी कार्य करेंगी वीरता तथा साहस से उसे सम्पन्न करेंगी। आपके द्वारा बहुत से अन्य लोग सुखी होंगे तथा उनका पालन पोषण आप करने में समर्थ रहेंगी। आपके नेत्र देखने में छोटे होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को आप चतुराई से पूर्ण करेंगी। साथ ही अभिमानी प्रकृति से भी आप युक्त रहेंगी तथा इसका प्रदर्शन करती रहेंगी।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता कामार्तोऽपिस्याच्छिरालोऽतिदक्षः।
धूर्तः क्रूरोऽत्यन्त सञ्जातगर्वः पूर्वाफाल्गुनयास्ति चेज्जन्मकाले।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक शूरवीर, दानी, बहुतों का पोषक, चतुर, धूर्त, कामातुर, कठोर हृदय और अतिघमण्डी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

सिंह राशि में पैदा होने के कारण आपका स्वभाव उग्र तथा तेजस्वी रहेगा। आपकी ठोड़ी स्थूल तथा शारीरिक संरचना विशाल रहेगी साथ ही आंखें भी छोटी एवं पीतवर्ण से युक्त रहेंगी। पर्वतों तथा वनों में भ्रमण करना आपको अत्यन्त रुचिकर लगेगा। स्वाभाविक रूप से आप कभी कभी बिना किसी कारण के ही शीघ्र क्रोधित होने वाली होंगी तथा आपके मन में इच्छाओं की भी बहुलता रहेगी जिनके पूर्ण न होने पर आप मानसिक कष्ट का अनुभव करेंगी। आपका स्वभाव दानी होगा तथा समयानुसार आप दीन दुःखियों की सहायता करती रहेंगी साथ ही अभिमान के भाव से भी आप युक्त रहेंगी। माता से आपको पूर्ण प्यार तथा स्नेह की प्राप्ति होती रहेगी तथा आपके पुत्र अल्प मात्रा में ही होंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा धैर्यपूर्वक अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपकी अस्थियां अत्यन्त पुष्ट रहेगी। आप कार्यारम्भ से पूर्व एक विशेष प्रकार की आवाज अवश्य ही करेंगी। आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा आकर्षक रहेगा। साथ ही आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण वर्चस्व स्थापित रहेगा। इसके अतिरिक्त किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले आप उसके विषय में गम्भीरता से चिन्तन करेंगी तथा पूर्ण सन्तुष्ट होने पर ही उसे आरम्भ करेंगी।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका मुख मंडल विशाल तथा ठोड़ी का भाग स्थूल रहेगा साथ ही आप का स्वभाव अभिमानी भी रहेगा जिसका आप यदा कदा प्रदर्शन करती रहेंगी। माता की आप अत्यन्त प्रिय रहेंगी।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप पेट भरने योग्य धनार्जन से सन्तुष्ट रहने वाली होंगी तथा पर्वतों की गहन गुफाओं में भ्रमण करने के लिए आप सर्वदा उत्सुक रहेंगी। सेवक एवं बन्धुवर्ग से आप युक्त रहेंगी। साथ ही आपका वक्षस्थल विस्तृत एवं आकर्षक रहेगा

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप प्रारम्भ से ही क्षमा प्रदान करने वाली प्रकृति से युक्त रहेंगी। दण्ड की अपेक्षा आप किसी को क्षमा करना श्रेयस्कर समझेंगी। साथ ही अपने कार्यों को करने में आप सर्वथा तत्पर रहेंगी तथा समय को नष्ट करना अनुचित समझेंगी। आपका अधिकांश समय देश विदेश की यात्राओं तथा भ्रमण में व्यतीत होगा। ठण्ड से आप एक प्रकार से भयभीत सी रहेंगी। साथ ही आपके सभी मित्र अच्छे एवं गुणवान रहेंगे। समाज के लोगों से आपका व्यवहार अत्यन्त

विनम्रता से युक्त रहेगा जिससे सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। आप शीघ्र ही नाराज होने वाली प्रकृति से भी युक्त रहेंगी तथा कई बुरी आदतों में लिप्त होने पर भी आप समाज में पूर्ण रूप से प्रसिद्ध रहेंगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी शारीरिक बनावट अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनोहरी होगी जिसे देखते ही लोग आपकी तरफ आकर्षित होंगे तथा आखें भी आपकी रहेंगी। आपकी दृष्टि भी गम्भीर होगी तथा गम्भीरता पूर्वक चिन्तन करने के उपरान्त आप किसी भी कार्य को प्रारम्भ करेंगी। साथ ही आप अपने जीवन में समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुखों का उपभोग करती हुई प्रसन्नता से जीवन व्यतीत करेंगी।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार आप इनका पूजार्चन करती रहेंगी। यदा कदा आप बिना किसी कारण के ही उत्तेजित हो जाएंगी तथा छोटी छोटी बातों में अभिमान का प्रदर्शन करेंगी। मन से आप दयालु रहेंगी तथा शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी। साथ ही आप अन्य कलाओं के क्षेत्र में भी पूर्ण ज्ञान रखेंगी। आप अत्यन्त बुद्धिमती महिला होंगी तथा शरीर की कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। आपके द्वारा अन्य कई लोग भी सुख को प्राप्त करेंगे।

धन एवं मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा आपके नेत्र भी बङे बङे होंगे। आप निशाने बाजी की कला में भी निपुण रहेंगी। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को वश में करने पर उनके ऊपर प्रभुत्व स्थापित करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

मूषक योनि में जन्म लेने के कारण आप अत्यन्त तीव्रबुद्धि की स्वामिनी रहेंगी तथा सम्पूर्ण प्रकार के धनैश्वर्य से आप सुसम्पन्न रहेंगी। आपके जीवन में धनाभाव के कम ही अवसर आएंगे। आप अपने कार्यों को सिद्ध करने में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा आलस्य एवं

अभिमान का आपमें सर्वथा अभाव रहेगा परन्तु आप कभी भी अन्य लोगों पर विश्वास नही करेंगी जो भी कार्य आप अन्य जनों से सम्पन्न करवाना चाहेंगी तो उसे अपने ही सम्मुख पूर्ण करवाएंगी।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त

रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फल प्रदान करने वाले हैं। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियो, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्णतया सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य भगवान को प्रातः काल अर्ध्य देना चाहिए तथा रविवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, गेहूं, गुड़ इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अनिष्ट फलों में न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।